P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन को दर्शाते कमलेश्वर के उपन्यास

अनिता प्रजापत
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर,
राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर

सारांश

जीवन यथार्थ को शब्दों में उतारने वाले महान साहित्यकार कमलेश्वर का उपन्यास साहित्य उनके देखे हुए और भोगे हुए सत्य का अंकन है। पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति का प्रभाव, नई चेतना, औद्योगीकरण, मशीनीकरण इत्यादि के कारण समाज में और सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। कहीं अर्थ की प्रधानता तो कहीं व्यक्तिवादी सोच के चलते सम्बन्धों में जो परिवर्तन आया है, उसे कमलेश्वर की सूक्ष्म दृष्टि ने पकड़ा है और अपने उपन्यासों में अत्यंत गहराई से उसका चित्रण किया है। महानगरों की यांत्रिकता, कृत्रिमता, स्वार्थवृत्ति, आपाधापी मध्यवर्गीय लोगों के सम्बन्धों में व्याप्त दिखाई देती है, जिसे कमलेश्वर ने प्रभावी ढंग से अंकित किया है।

मुख्य शब्द : सम्बन्ध, परिवर्तन, शिक्षा, महानगर, प्रेम, विवाह, अर्थ।

प्रस्तावना

समाज व्यक्तियों के सामुदायिक जीवन का स्वरूप है और साहित्य सामुदायिक जीवन का प्रतिरूप। पाश्चात्य शिक्षा–संस्कृति का प्रभाव, औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि कारणों से व्यक्ति का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदला है। परम्परागत संस्कारों, मूल्यों के प्रति आस्था कम हुई है। परिस्थितियों और उनके प्रभाव समाज व व्यक्तियों पर अलग रूप में दिखाई देने लगे हैं। जीवन व जगत को खुली व पैनी दृष्टि से देखने वाले कमलेश्वर ने इन सभी बदलावों का वास्तविक एवं स्वाभाविक चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

आज सामाजिक सम्बन्धों में जो परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, जो कृत्रिमता, दिखावटीपन, स्वार्थीप्रवृति, अर्थ की प्रधानता, यांत्रिकता, नीरसता, स्थायित्व की कमी रेखांकित की जा रही है, उसके लिए पाश्चात्य विचारधारा के प्रभाव से विकसित जीवन के प्रति भौतिकवादी सोच, परम्परागत सामाजिक मान्यताओं की वर्तमान युग में उपयोगिता के सम्बन्ध में संदेह भरी दृष्टि, प्राचीन सांस्कृतिक धारा से अलगाव, परम्परागत भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति उपेक्षा की भावना आदि कई तथ्य उत्तरदायी कहे जा सकते हैं। इन सबके कारण आये व्यक्तिवाद ने पुराने सामाजिक–पारिवारिक ढाँचे को तोड़ दिया है। परिवार में सम्बन्धों की आत्मीयता नष्ट हो गई है। सम्बन्धों के स्थायित्व व शाश्वतता का 'मिथक' टूटा है। कमलेश्वर ने सामाजिक सम्बन्धों में हो रहे इस परिवर्तन को गहराई से देखा है और अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

आज सामाजिक–पारिवारिक सम्बन्धों में अर्थ की प्रधानता हो गई है। समाज व संस्कृति पर अर्थ हावी होता जा रहा है। सभी सम्बन्ध आर्थिक भूमिका पर बनने लगे हैं। पैसा पास है तो सब पूछते हैं, नहीं तो अपने भी पराये हो जाते हैं। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में श्यामलाल कुछ ऐसा ही महसूस करता दर्शाया गया है। नौकरी चले जाने के बाद उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। वह अपनी पत्नी रम्मी से कहता है– ''बिना पैसे के यहाँ कोई पहचानता ही नहीं। पैसा पास है तो दुनिया अपनी है, नहीं तो कोई साला....'[1] परम्परागत परिवार–व्यवस्था में सबसे बड़े और मुखिया की छत्रछाया में परिवार के सारे क्रियाकलाप चलते थे और वही परिवार से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विषय पर निर्णय लिया करता था। वर्तमान में व्यक्तिवाद, भौतिकवाद के कारण इस व्यवस्था में परिवर्तन आया है। अब जो व्यक्ति धन कमाता है उसको परिवार में अधिक अधिकार प्राप्त हो जाते हैं। श्यामलाल की जवान बेटी तारा हरबंस की दुकान में काम करने लगती है तो घर से सम्बन्धित सभी निर्णयों का अधिकार तारा के हाथ में चला जाता है। घर में सबसे महत्त्वपूर्ण वह और उसके कार्य हो जाते हैं। श्यामलाल स्वयं को उपेक्षित व महत्वहीन समझते हुए सोचता है कि अब उसका कोई रिश्ता किसी से नहीं रह गया है। किसी को उसकी जरूरत नहीं है। अब उसके वश में कुछ नहीं रह गया है। वह कोई फैसला नहीं ले सकते। घर की छोटी से छोटी बात भी उसके अधिकार में नहीं रह गई है। पुत्र वीरन की नौकरी लगने और हर महीने श्यामलाल के नाम मनीऑर्डर

आने पर फैसला लेने का हक उसे मिल जाता है। ''मनीऑर्डर पाते ही श्यामलाल आठ–दस दिनों के लिए घर में फैसले लेने लगते। पैसे खत्म होते ही फैसले लेने का हक अपने आप तारा के पास चला जाता।''[2]

सम्बन्धों में हावी होते अर्थ को कमलेश्वर के 'आगामी अतीत' उपन्यास में भी देखा जा सकता है जहाँ धन प्रेम–पूर्ण सम्बन्ध से महत्वपूर्ण हो जाता है। चन्दा व कमलबोस परस्पर प्रेम करते हैं और कमलबोस चन्दा से विवाह का वायदा करता है। चन्दा कमलबोस को अपना पूर्ण समर्पण दे देती है किन्तु कमलबोस चन्दा के प्रेम को भुलाकर अवसर आने पर अमीर उद्योगपति की बेटी निरूपमा से विवाह कर लेता है। परिणामस्वरूप कई जिन्दगियाँ बर्बाद हो जाती है। कमलबोस व निरूपमा का वैवाहिक जीवन असफल हो जाता है और चन्दा अनमेल विवाह करके आजीवन कष्ट झेलती है।

आर्थिक आधार पर बनते सम्बन्धों का चित्रण कमलेश्वर ने डाक बंगला उपन्यास में भी किया है। उपन्यास की मुख्य पात्र इरा अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अधेड़ डॉ0 चन्द्रमोहन से विवाह करती है और असंतुष्ट होने पर उसे छोड़कर चली जाती है। इरा कहती है – ''आखिर एक दिन हारकर मैंने शादी की स्वीकृति दे दी। मेरे सामने कुछ भी नहीं था। डॉक्टर को पैसे का सहारा था और सच पूछो तो मुझे भी वह सहारा उस वक्त छोटा नहीं लगा था।''[3] इसी उपन्यास की एक अन्य पात्र शीला अलग–अलग पुरूषों के साथ किराये की बीवी बनकर रहती है। ''वह हर घर में बीवी का नकाब लगाकर रहती है और घर का इस तरह ध्यान रखती है जितना कि बीवियाँ भी नहीं रख सकती। अपनी शारीरिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा करने का यही साधन है उसके पास।''[4]

दाम्पत्य सम्बन्धों में हो रहे परिवर्तन को कमलेश्वर ने अनेक उपन्यासों में चित्रित किया है। आज पति–पत्नी सम्बन्ध के परम्परागत स्वरूप में बदलाव आया है। आज विवाह में इस बात की गारंटी नहीं है कि अंतिम सांस तक पति–पत्नी का रिश्ता स्थायी रहेगा। हिन्दुओं में विवाह को एक संस्कार के रूप में माना गया है। आध्यात्मिक प्रयोजनों से ही स्त्री–पुरूष परस्पर स्थायी सम्बन्धों में बँधते हैं। यहाँ विवाह धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति, पुत्र–प्राप्ति, पारिवारिक सुख, सामाजिक एकता, पितृ ऋण से मुक्ति, पुरूषार्थों की पूर्ति आदि उद्देश्यों के लिए किया जाता है। आधुनिक युग में बदली परिस्थितियों के कारण स्त्री–पुरूष सम्बन्ध की परम्परागत मान्यताएँ समाप्त हुई है और एक नई नैतिकता का विकास हुआ है। 'तीसरा आदमी' उपन्यास में नरेश कहता है– ''विवाह का परम्परागत स्वरूप अब नष्ट हो चुका है। उसकी सामाजिक अपेक्षाएँ बदल गई हैं।... छल के सिवा अब इस रिश्ते में बाकी क्या बचा है?''[5] उपन्यास के पात्र चित्रा और नरेश दिल्ली में सुमन्त के साथ एक कमरे के घुटन भरे माहौल में रहते हैं। जहाँ न तो उचित आवास की सुविधा है और न परिवार एवं बड़ों का सहयोग, अनुशासन और नियंत्रण। ऐसे माहौल में रहते–रहते नरेश और चित्रा का सम्बन्ध संदेह, कुण्ठा और अलगाव का शिकार हो जाता है। पति–पत्नी के सम्बन्ध में अहसास की गहराइयाँ और आत्मीयता नहीं आ पाती है। वे कभी एक–दूसरे के पूरक नहीं बन पाते हैं। नरेश और चित्रा के सम्बन्धों में साथ–साथ रहते हुए भी कोई भावनात्मक पूंजी पैदा नहीं होती है। नरेश कहता है– ''लगता था कि जैसे इतने थोड़े–से दिनों में ही हमारे बीच एक अजीब–सा ठण्डापन भर गया है। हम दोनों जैसे एक–दूसरे के साथ यह विवाहित जीवन जीने के लिए कुछ–कुछ से मजबूर थे और कुछ मजबूरी थी हमारे जवान होने की। जैसे हमें एक–दूसरे की जरूरत कुछ क्षणों के लिए थी।''[6] पति–पत्नी का रिश्ता एक जरूरत भर का रह गया है। उनमें प्यार भी हो यह जरूरी नहीं। प्रस्तुत उपन्यास में ही कथानायक अन्यत्र कहता है– ''शादी तो इस बात की गारंटी नहीं है कि पुरूष और नारी प्यार भी करेंगे ही। यह रिश्ता तो सिर्फ रहम का रह गया है। इसके अलावा और क्या है इसमें ? नारी पुरूष पर रहम करके उसकी वासना की तृप्ति के लिए अपना शरीर दे देती है और पुरूष उस पर रहम करके उसे सुरक्षा प्रदान कर देता है। अन्ततः यह रहम ही उन दोनों को जोड़े रहता है। जहाँ यह रहम नहीं रह जाता, वहाँ सब कुछ टूट जाता है।''[7]

कमलेश्वर के उपन्यासों के पात्र विवाह को कोई संस्कार नहीं मानते। उनके लिए यह कोई आध्यात्मिक या आत्मिक मिलन भी नहीं है। 'डाक बंगला' की इरा विवाह को महज एक शारीरिक आवश्यकता बताती है। ''शादी से आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है। अगर आत्मिक मिलन की ही बात होती तो शादियाँ करने की उम्र पचास के बाद होती है। यह महज एक शारीरिक आवश्यकता है, जिसे आदर्श का ताज पहनाकर गरिमा प्रदान की गई है।''[8] इनके लिए विवाह एक सामाजिक समझौता मात्र है जिसे कभी भी तोड़ा जा सकता है। पति पत्नी के सम्बन्धों का आधार समानता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री के लिए पतिव्रत एवं सतीत्व की कल्पना की गई है अतः परम्परागत मूल्यों के अनुसार स्त्री द्वारा पति को त्यागने की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेकिन आज स्त्री–पुरूष–सम्बन्ध में समानता के विचार के कारण इस स्थिति में परिवर्तन आया है। कमलेश्वर के पात्र स्पष्ट शब्दों में कहते हैं– ''अगर शादी पवित्र है, तो तलाक भी उतना ही पवित्र है... शादी के गलत हो जाने पर भी तलाक न लेना शायद पाप होता... शादी एकतरफा खेल नहीं है... औरत किसी की जरखरीद गुलाम नहीं है।''[9]

कमलेश्वर के उपन्यासों में प्रेमी–प्रेमिका सम्बन्ध का भी अत्यन्त स्वाभाविक और यथार्थ रूप देखने को मिलता है। परम्परागत अलौकिक, अतीन्द्रिय और उदात्त प्रेम के विपरीत इनके पात्रों का प्रेम लौकिक और शरीरी है, जिसे जीवन की सहज आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास में बंसिरी और सरनाम सिंह के प्रेम का चित्रण हुआ है। दोनों साथ–साथ जीवन जीने का सपना देखते हैं। दोनों के बीच शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित होता है लेकिन परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण दोनों का प्रेम असफल हो जाता है। अनजाने में सरनाम सिंह, बिक्री के लिए आई हुई बंसिरी को रंगीले के लिए खरीदता है। उस समय एक पल के लिए बंसिरी के प्रति कोमल भाव फिर

जाग्रत होता है, लेकिन अनेक पुरूषों के साथ रही हुई बंसिरी को वह स्वीकार नहीं कर पाता।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में सलमा और सत्तार एक–दूसरे से प्रेम करते हैं। सलमा विवाहित है तथा पति के व्यवहार से दुखी और परेशान है। वे दोनों छुप–छुपकर मिलते हैं और लोगों को पता चलने पर पंचायत होती है तो सलमा स्पष्ट रूप से स्वीकार करने से भी नहीं डरती। ''सलमा ने नजर भर सत्तार को देखा और बोली, मैं बताये देती हूँ... मैं इसके साथ भुतहे मकान में गई थी''[10] कुछ समय पश्चात् सलमा का पति लौट आता है और सत्तार से उसका मिलना–जुलना बंद हो जाता है। दोनों ही इस स्थिति को व्यावहारिकता के साथ स्वीकार कर लेते हैं। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में हरबंस और तारा के स्वाभाविक और यथार्थ प्रेम का चित्रण हुआ है। आर्थिक संघर्ष के दिनों में हरबंस और तारा सम्पर्क में आते हैं और उनमें सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। तारा हरबंस से विवाह करना चाहती है, जिसे उसके घर वाले थोड़ी बहुत आनाकानी के बाद स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रकार आवश्यकता से पनपा उनका प्रेम सफल हो जाता है।

'डाक बंगला' की इरा सच्चे प्रेम की तलाश में भटकती रहती है। उसका स्त्रीत्व सिर्फ काम–भावना और बंधनहीन प्रकृति की तमन्ना नहीं रखता, बल्कि वैसे पुरूषत्व की तलाश में व्याकुल रहता है जो शरीर के साथ–साथ संवेदना के स्तर पर भी उसे प्यार दे। इरा कहती है– ''मेरी जिन्दगी बगैर मंजिलों के चलती रही– मैं चिर–पथिक हूँ। मेरा पड़ाव कहीं भी नहीं है। इन पहाड़ी रास्तों में जैसे लोग पैदल चलते हैं वैसे ही मैं आज तक चलती रही हूँ। रास्ते में कोई गंदी चाय की दुकान आ गई तो लोग वहाँ भी रुककर एक प्याली पी लेते हैं,... ''[11] अन्यत्र इरा कहती है– ''मेरी जिन्दगी की त्रासदी सिर्फ यही है कि मुझे निरर्थक प्यार ही मिला... जो भी मेरी जिन्दगी में आया उसने यही विलास किया मेरे साथ – क्यों कोई भी मुझसे खुलकर नहीं कह पाया कि जिन्दगी की शर्तें प्यार से बड़ी होती है... सब यही कहते रहे कि प्यार जिन्दगी से बड़ा होता है... लेकिन प्यार को जिन्दगी के मुताबिक काटते, सिलते, और उधेड़ते रहे...''[12] इरा एक ऐसी पात्र है जिसके जीवन का एक ही लक्ष्य है अपने मुताबिक प्यार और पुरुषत्व की तलाश और यह तलाश उसकी अन्तहीन हो जाती है। इरा महानगरीय सभ्यता के सम्पन्न घर के ऐसे पात्रों का प्रतिनिधित्व करती है जिनकी जिन्दगी की सभी समस्याएँ प्रेम से ही शुरू होती है और प्रेम के इर्द–गिर्द ही चलती रहती है।

'आगामी अतीत' उपन्यास में कमलबोस और चन्दा की असफल प्रेम कहानी है। निम्न मध्यवर्गीय युवक कमलबोस, गरीब वैद्य की लड़की के सम्पर्क में आता है और दोनों परस्पर प्रेम करने लगते हैं। चन्दा अपना सम्पूर्ण समर्पण कमलबोस को देती है। कमलबोस वापिस आने का वादा करके चला जाता है और लौटकर नहीं आता। वह सफलता और शोहरत की चाह में बड़े उद्योगपति की बेटी से शादी करके अपनी उच्चाकांक्षाओं को पूरा करने की दौड़ में शामिल हो जाता है। कमलबोस का इन्तजार करके चन्दा जब हार जाती है तो वह भी मजबूर होकर विवाह कर लेती है पर दोनों का ही वैवाहिक जीवन सफल नहीं हो पाता। यहाँ चन्दा अवश्य ही भावुक प्रेमिका है, लेकिन कमलबोस के लिए चन्दा की भावनाओं से महत्त्वपूर्ण है जीवन में सफलता प्राप्त करना, जिसके लिए वह चन्दा को भुलाकर उच्चवर्गीय निरुपमा से विवाह कर लेता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में जिन पात्रों के प्रेम का चित्रण हुआ है वे सब साथ जीने–मरने की कसमें खाने वाले भावुक प्रेमी नहीं है। वे सब परिस्थितियों की मार और संघर्ष के थपेड़ों के आगे शीघ्र ही समझौता कर लेते हैं। बंसिरी रंगीले से विवाह कर लेती है, इरा डॉ0 चन्द्रमोहन से विवाह कर लेती है, सलमा अपने पति के साथ चली जाती है, तो कमलबोस और चन्दा दोनों ही अलग–अलग जगह विवाह कर लेते हैं। कमलेश्वर के पात्रों का प्रेम किसी नैतिकता या पवित्रता के बंधन को भी स्वीकार नहीं करता। वे नितान्त यथार्थवादी दृष्टि से वास्तविकता के धरातल पर स्थूल प्रेम का चित्रण करते हैं। उनके सभी प्रेमी जोड़े विवाह पूर्व शारीरिक सम्बन्ध से परहेज नहीं करते तथा विवाहित स्त्री–पुरुष भी विवाहेतर प्रेम सम्बन्ध में बुराई नहीं मानते।

महानगरों की यांत्रिकता, नीरसता, कृत्रिमता, व्यस्तता जो आज रिश्तों में भी घर कर गई है, का चित्रण भी कमलेश्वर के उपन्यासों में हुआ है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में वीरन की मृत्यु के बाद तारा जिस स्यापे का आयोजन करती है या जिस बनावटी सहानुभूति के साथ अपनी माँ रम्मी को अपने घर पर रहने के लिए कहती है, वह इसी ओर संकेत करता है। ''सबसे पहले तारा ने यह तय किया कि घर में विधिवत रोना–धोना कर दिया जाये ताकि मोहल्ले वालों को पता चल जाये कि वीरन की मौत हो गई है। समीरा और रम्मी का रोना कई बार हो चुका था, इसलिए उससे लोगों में यह चर्चा फैलने की उम्मीद नहीं थी कि अब वीरन की मौत का स्यापा हो रहा है।... तारा ने अपने घर की पड़ोसिनों को मातम के लिए जमा किया।... स्यापा कर चुकने के बाद औरतें कच–कच कर रही थी और पूरे घर में ऐसे मँडरा रही थी जैसे घूमने आई हो।... समीरा रोने वालियों की इस बारात के आने का कोई मतलब नहीं समझ पाई थी।... इस शाम जैसे उनके आंतरिक दुःख का तमाशा बना दिया गया था।''[13] महानगरों में चारों ओर फैले जनसमुद्र और भीड़ में भी व्यक्ति के अकेलेपन का वर्णन लेखक ने यहाँ किया है। वहाँ एक को दूसरे के दुःख–सुख से मतलब नहीं है। वहाँ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच संवेदनहीनता दिखाई देती है। कमलेश्वर लिखते हैं– '' दुःख और सुख कितने मामूली बनकर रह गए हैं, अब उन्हें लेकर ही जिन्दगी नहीं गुजारी जा सकती। यहाँ रहते हुए इन्हें बहुत दूर तक और देर तक साथ नहीं रखा जा सकता। दोनों ही मरने लगते हैं। रिश्ते और रिश्तों के रुख बदल गए हैं।...''[14]

'काली आँधी' उपन्यास में सफल राजनीतिज्ञ मालती के पास अपने पति और पुत्री के लिए समय नहीं होता है। जगदीश बाबू मालती की यांत्रिक जिन्दगी के बारे में कहता है– ''तुम्हें अपनी बेरफ्तार दौड़ती जिन्दगी में सोचने का वक्त ही कहाँ मिला है? मशीनें नहीं सोचती,

मशीनों के लिए आदमी सोचता है। और सफलता सिर्फ एक मशीन है। अब तुम औरत नहीं – एक सफलता बन गई हो!''[15] 'वही बात' में अति महत्वाकांक्षी प्रशान्त के पास अपनी पत्नी के लिए वक्त नहीं होता है। ''प्रशान्त को अपनी दिमागी उड़ानों की वजह से इतनी फुर्सत नहीं थी कि वह समीरा के शब्दों में निहित व्यंग्य और तकलीफ को समझने की कोशिश कर सके।''[16] 'आगामी अतीत' उपन्यास में कमलबोस की भौतिकवादी दौड़ और कृत्रिमता के बारे में उसका मित्र कहता है– ''प्रतियोगिता! इस बेहूदे कंपिटीशन की दौड़ में तू शामिल हो गया।... इसमें जीतने के लिए वो सब चीजें चाहिए, जो एक सफल होने वाले आदमी के लिए बेहद जरूरी होती है– एक खूबसूरत बीवी चाहिए। पैसा चाहिए... ऊँची रिश्तेदारी चाहिए... और सबसे बड़ी चीज जो चाहिए वह यह कि मुकाबले की इस दुनिया में सफल होने के लिए, उसे दूसरे के ज़ज्बातों का कोई ख़याल नहीं करना चाहिए। उसे स्वार्थी होना चाहिए.. इसीलिए तुमने चंदा के जज्बात इस्तेमाल कर लिए...''[17] यहाँ कमलबोस की जिस स्वार्थवृत्ति, अति–महत्वाकांक्षा, यांत्रिकता का चित्रण हुआ है वह आज महानगरीय युवा पीढ़ी में काफी हद तक देखने को मिल जाती है। आज जीवन के मूल्य बदल गये हैं और रिश्तों के अर्थ बदल गए हैं। अब भौतिक वस्तुओं के समान ही सम्बन्धों को भी केवल इस्तेमाल किया जाता है। उपयोगी न रहने पर दूरी बना ली जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

नयी शिक्षा चेतना, शहरीकरण, भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा आदि के कारण आये सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन, जिसका चित्रण कमलेश्वर के उपन्यासों में हुआ है, का विवेचन करना।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में सम्बन्धों में हो रहे परिवर्तन का प्रभावी व वास्तविक चित्रण हुआ है। नई शिक्षा, चेतना, औद्योगीकरण, तकनीकी विकास, मीडिया–संस्कृति के कारण आज हमें अपने आस–पास जीवन–मूल्यों में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है, जिसके चलते ही सम्बन्धों में परिवर्तन आया है, उसे कमलेश्वर ने बहुत पहले ही महसूस कर लिया था, और साहित्य में चित्रित कर दिया था।

पाद टिप्पणी

1. *कमलेश्वर, संस्करण : 2011, समग्र उपन्यास (समुद्र में खोया हुआ आदमी), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 321*
2. *वही, पृष्ठ संख्या 301*
3. *कमलेश्वर, संस्करण : 2011, समग्र उपन्यास (डाक बंगला), राजपाल एण्ड संस दिल्ली, पृष्ठ संख्या 262*
4. *वही, पृष्ठ संख्या 250*
5. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (तीसरा आदमी), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 189*
6. *वही, पृष्ठ संख्या 173*
7. *वही, पृष्ठ संख्या 194*
8. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (डाक बंगला), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 252*
9. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (वही बात), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 548*
10. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 96*
11. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (डाक बंगला), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 227*
12. *वही, पृष्ठ संख्या 227*
13. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (समुद्र में खोया हुआ आदमी), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 346*
14. *वही, पृष्ठ संख्या 350*
15. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (काली आँधी), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 438*
16. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (वही बात), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 539*
17. *कमलेश्वर, संस्करण 2011, समग्र उपन्यास (आगामी अतीत), राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 468*